thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15

सृष्टि संवत् 1960853115
विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 11 अंक : 20 रोहतक, 21 अक्तूबर, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

विष ही महर्षि की मृत्यु का कारण

❑ डॉ० अशोक आर्य, जी. 7, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी, जिला गाजियाबाद

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के देहावसान का कारण जहाँ जोधपुर राज्य सहित अनेक कुचक्रगामी रहे, वहां दूध में विष भी उनके बलिदान का मुख्य कारण रहा। जब से महर्षि का देहावसान हुआ है, तब से ही जोधपुर के राज-परिवार का यह प्रयत्न रहा है कि किसी प्रकार से जोधपुर राजघराने से एक ऋषि की हत्या का दोष हटाया जा सके। इस कड़ी में अनेक प्रयास हमारे सामने आते हैं जो उस राजपरिवार के द्वारा हुए हैं तथा हो रहे हैं। इन पंक्तियों में मैं उन प्रयासों का तो वर्णन नहीं करने जा रहा परन्तु इस प्रयास के किसी न किसी रूप में जो आर्य ही सहभागी बनते हुए दिखाई देते हैं, समय-समय पर ऐसे आर्यों की कलम से आर्यों के ही विरोध में किये जा रहे कुप्रयास को दूर करने का यत्न आर्यसमाज के महान् लेखकों ने किया है, इन पंक्तियों में मैं भी कुछ ऐसा ही प्रयत्न करने का साहस कर रहा हूँ।

लगभग चालीस वर्ष पूर्व ऐसा ही एक प्रयास श्री लक्ष्मीदत्त दीक्षित जी ने किया था, जिसका मुंहतोड़ उत्तर अबोहर से प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने अनेक लेखों के माध्यम से देते हुए सप्रमाण सिद्ध किया था कि महर्षि के देहान्त का कारण विष ही था। इस अवसर पर उन्होंने एक पुस्तक भी तैयार की थी **'महर्षि का विषपान अमर बलिदान'**। यह पुस्तक आर्य युवक समाज अबोहर ने प्रकाशित की थी। इसका प्रकाशन उस समय हुआ था, जब मैं आर्य युवक समाज अबोहर के प्रकाशन विभाग का मंत्री होता था अर्थात् इस पुस्तक का प्रकाशन मैंने ही किया था। इस पुस्तक में स्वामी जी के देहावसान का कारण विषपान सटीक रूप से सिद्ध किया गया था तथा इससे पंडित लक्ष्मीदत्त दीक्षित जी की बोलती ही बंद हो गई थी। वह इस आधार पर जो पुस्तक लिखने जा रहे थे, उसको लिखने का विचार ही उन्होंने त्याग दिया। हमारे विचार में इतने सटीक प्रमाण आने के बाद आर्यसमाज में यह विवाद खड़ा करने का प्रयास बंद हो जाना चाहिए था किन्तु आर्यजगत् के अंक दिनांक 25 मई से 31 मई 2014 के पृष्ठ 9 पर श्री कृष्णचन्द्र गर्ग पंचकूला का लेख **जगन्नाथ ने महर्षि को दूध में विष दिया-एक झूठी कहानी** के अन्तर्गत यह लिखने का यत्न किया है कि महर्षि को विष देने की कथा झूठी है, के माध्यम से एक बार फिर यह विवाद खड़ा करने का यत्न किया है। मैं नहीं जानता कि गर्ग जी ने किस पूर्वाग्रह के कारण यह लिखा है किन्तु मैं बता देना चाहता हूँ कि इस लेख के लेखक को संभवतया या तो महर्षि के देहावसान के सम्बन्ध में कुछ ज्ञान ही नहीं है या फिर वह जान-बूझकर इस विवाद को बनाये रखना चाहते हैं ताकि कुछ उल्लू सीधा किया जा सके।

लेखक ने स्वामी जी के रसोइये के नाम का विवाद पैदा करने का यत्न किया। स्वामी जी को दूध देने वाला जगन्नाथ था, धूड़ मिश्र था या कोई अन्य। नाम के विवाद में पड़ने की आवश्यकता नहीं है। नाम चाहे कुछ भी हो, प्रश्न तो यह है कि क्या स्वामी जी को विष दिया गया या नहीं? लेखक ने बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय जी, पंडित लेखराम जी, पंडित गोपालराव हरि जी द्वारा लिखित स्वामी जी के जीवन चरितों का वर्णन करते हुए लिखा है कि इन सब ने स्वामी जी को दूध पीकर सोते हुए दिखाया है किन्तु इस दूध में विष था या नहीं, यह स्पष्ट किये बिना ही लिख दिया कि यह दूध था न कि विष अथवा कांच। लेखक को शायद यह पता नहीं कि राजस्थान में विष को कांच भी कहते हैं तथा दूध में भी विष हो सकता है।

जोधपुर के उस समय के राजा की कुटिलता को देखते हुए स्वामी जी को यह कहा भी गया था कि वह जोधपुर न जावें, क्योंकि वहां का राजा कुटिल है, कहीं ऐसा न हो कि स्वामी जी को कोई हानि हो जावे। इससे भी स्पष्ट होता है कि जोधपुर जाने से पूर्व ही स्वामी जी की हानि होने की आशंका अनुभव की जा रही थी। अभी-अभी प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने एक पुस्तक अनुवाद की है। पुस्तक का नाम है **महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्पूर्ण जीवन चरित** लेखक पंडित लक्ष्मण जी आर्योपदेशक। यह विशालकाय पुस्तक मूल रूप में उर्दू में लिखी गई थी तथा प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने इसका अनुवाद कर सन् 2013 में ही दो भागों में प्रकाशित की है। इस पुस्तक में जिज्ञासु जी ने वह सामग्री भी जोड़ दी है जो अब तक अनुपलब्ध मानी जाती थी। इसके साथ ही इस पुस्तक के अन्त में **महर्षि का विषपान अमर बलिदान** नामक पुस्तक भी जोड़ दी है। प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु इस काल के आर्यसमाज के सबसे प्रमुख शोधकर्त्ता हैं, इस पर कहीं कोई दो राय नहीं है। इसलिए जब वह लिख रहे हैं **महर्षि का विषपान अमर बलिदान** तो यह स्पष्ट हो जाता है कि स्वामी जी के देहावसान का कारण, बलिदान का कारण विषपान ही था। जिज्ञासु जी की पुस्तक के इस शीर्षक मात्र को देखकर ही कहीं अन्य किसी प्रकार की संभावना नहीं रह जाती। तो भी मैं यहाँ कुछ प्रमाण देकर स्पष्ट करना चाहूँगा कि स्वामी जी के बलिदान का कारण केवल और केवल विष ही तो था अन्य कुछ नहीं।

स्वामी जी को मृत्यु का भय न था-महर्षि का विषपान अमर बलिदान के आरम्भ के दूसरे पहरे में जिज्ञासु जी लिख रहे हैं कि स्वामी जी मृत्यु से डरते न थे। वह मरना और जीना समान जानते थे। प्रसंग दिया है कि विष दिए जाने से थोड़ा समय पहले ही एक महाराजा की रानी का देहान्त हो गया। कुछ व्यक्ति दूरदर्शिता दिखाते हुए प्रेमपूर्वक कहते हैं कि आप भी थोड़ा शोक प्रकट करने चले जायें। ऋषि कहते हैं कि इस समय सांसारिक बंधन अपने पर कैसे लाद लूँ? मेरे लिए जीवन व मृत्यु एक समान है।

इतने वर्ष कैसे जी पाए? सत्य का प्रचार करते हुए ऋषि के अनेक विरोधी बन गए। अनेक बार उन्हें विष दिया गया, पत्थर फैंके गए, सांप फैंके गए और न जाने क्या-क्या हुआ किन्तु फिर भी वह इतने वर्ष तक जीवित रहे, यह भी एक आश्चर्य है। स्वामी जी को मृत्यु से लगभग दो वर्ष पूर्व ही अपनी मृत्यु का पूर्वानुमान हो गया था। इस सम्बन्ध में उन्होंने एक पत्र के माध्यम से बारम्बार कर्नल अल्काट को मेरठ में कहा था कि मैं सन् 1884 का वर्ष कदापि नहीं देख सकता।

जोधपुर का स्वागत-जोधपुर जाते समय 28 मई 1883 को शाहपुराधीश को पत्र में लिखा था कि बीच के स्टेशनों पर पुकारने पर भी कोई गाड़ीवान अथवा सिपाही नहीं था। यदि ऐसे व्यक्ति हैं तो राजकाज की हानि होगी। स्वामी जी के साथ चारण अमरदास थे। पंडित कमलनयन का कथन है कि जाते समय किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति ने स्वामी जी को सचेत करते हुए कहा भी था कि **महाराज वहां कुछ नरमी से उपदेश करना क्योंकि वह क्रूर देश है।**

गर्ग जी ध्यान से पढ़िए यहाँ लक्ष्मण जी की कृति का अनुवाद करते हुए जिज्ञासु जी भी लिख रहे हैं कि प्रतिश्याय हो गया था। 29 सितम्बर अर्थात् चतुर्दशी की रात्रि को धौड़ मिश्र रसोइये से (जो शाहपुरा का रहने वाला था) दूध पीकर सोये। उसी रात उदर शूल तथा जी मिचलाने लगा। 30 सितम्बर को बहुत दिन निकले उठे। उठते ही पुनः वमन व

क्रमशः पृष्ठ दो पर....

thearyasamaj.org

विष ही महर्षि की मृत्यु का..... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

जोर का शूल होने लगा, दस्त भी होने लगे। संदेह होने पर अजवायन का काढ़ा पीया। वैद्यक वाले बताते हैं कि अजवायन विष का प्रभाव दूर करने के लिए होती है। **.....सत्यरूपी अमृत की चर्चा करते-करते महर्षि को सांसारिक मनुष्यों से विषपान करना पड़ा। आह! वह 29 की रात्रि वाला दूध क्या था, मृत्यु का सन्देश था। दूध में चीनी के साथ संखिया को बारीक पीसकर दिया गया था। इस रोग का ज्यों-ज्यों उपचार किया गया त्यों-त्यों बढ़ता गया। गर्ग जी क्या आपने कभी ऐसा प्रतिश्याय देखा है जो वमन, दस्त व पेटशूल का कारण हो? नहीं तो फिर ऐसा झूठ क्यों घड़ रहे हो?**

इस रोग की जानकारी मिलने पर अच्छे चिकित्सक होते हुए भी अली मरदान खान को चिकित्सा का कार्य सौंप दिया। कहते हैं कि वह भी शत्रुओं की टोली का ही भाग था। ....जो औषध दी गई उसके लिए बताया गया था कि तीन-चार दस्त आवेंगे किन्तु रात्रिभर तीस से भी अधिक आ गए तथा दिन में भी आते रहे। दस्तों से स्वामी जी इतने क्षीण हो गए कि उन्हें मूर्च्छा आने लगी। पांच अक्तूबर तक अवस्था यहाँ तक पहुँच गई कि श्वास के साथ हिचकियाँ भी आने लगी। जब स्वामी जी ने छः अक्तूबर को कहा कि अब तो दस्त बन्द होने चाहिएं तो डाक्टर ने कहा कि दस्त बन्द होने से रोग बढ़ने का भय है। बार-बार कहने पर भी दस्त बन्द न होने दिए गए। इस प्रकार अली मरदान खान की चिकित्सा 16 अक्तूबर तक चली। इस मध्य दस्तों के कारण स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया। मुख, कंठ, जिह्वा, तालु, शिर तथा माथे पर छाले पड़ गये। बोलने में भी कष्ट होने लगा। बिना सहायता के करवट लेना भी कठिन हो गया। **चिकित्सा काल में उसका प्रतिपल प्रतिक्षण बढ़ते रहना किसी बिगाड़ उत्पन्न करने वाले पदार्थ का काम था तथा वह किस संयोग से श्री महाराज की काया में जो पूर्ण ब्रह्मचर्य तप व सुधारणाओं सुघठित था, प्रविष्ठ हुआ?**

देश-हितैषी पत्र अजमेर-यह पत्र लिखता है कि भ्रात्रिवृन्द! यह विचारने का स्थान है। न जाने यह किस प्रकार का विरेचन तथा औषधि थी। इस पर बहुधा मनुष्य कई प्रकार की शंका करते हैं और कहते हैं कि स्वामी जी ने भी कई पुरुषों और महाराजा प्रतापसिंह जी से इस विषय में स्पष्ट कह दिया था, परन्तु अब क्या हो सकता है? लाख यत्न करो। स्वामी जी महाराज अब नहीं आ सकते। जो हुआ, सो हुआ परन्तु हमको इतना ही शोक है कि स्वामी जी महाराज ने किसी आर्यसमाज को सूचित न किया। यदि यह वृत्तान्त उस समय जाना जाता तो यह रोग इतनी प्रबलता को प्राप्त न होता।

जब स्वामी जी का स्वास्थ्य गिरता ही चला गया तो पंडित देवदत्त लेखक तथा लाला पन्नालाल अध्यापक जोधपुर ने स्वामी जी से कहा कि यह स्थान छोड़ देना चाहिए। स्वामी जी ने इस संबंध में महाराज को लिखा। महाराज ने कहा कि **इस दिशा में यहाँ से जाने से जोधपुर की अपकीर्ति होगी किन्तु स्वामी जी के न मानने पर वह चुप हो गया।** स्वामी जी की चिकित्सा शुश्रुषा करने वाले लोग तो वही जो उनकी मौत ही चाहते थे। यदि जेठमल न जाते तो स्वामी जी का देहान्त तो जोधपुर में ही हो जाता और संस्कार की सूचना भी आर्यों को न होती। जेठमल जी ने अजमेर जाकर सभासदों को सूचित किया। पीर जी हकीम को सब बताया, उन्होंने कुछ औषध दी तथा बताया कि स्वामी जी को संखिया दिया गया है। (देखें महर्षि का विषपान अमर बलिदान) पीर जी की औषध से कुछ लाभ मिला। मूर्छा और हिचकी कम हो गई। हस्ताक्षर करने लगे। आबू में डॉ. लक्ष्मणदास जी के उपचार से भी लाभ हुआ। हिचकियां व दस्त बन्द हो गए किन्तु 23 अक्तूबर को त्यागपत्र देने पर भी कड़ी बरतते हुए अजमेर भेज दिया। मार्ग में मिलाने वालों को आप सजल नेत्रों से स्वामी जी का हाल सुनाते थे। यहाँ से स्वामी जी को अजमेर लाया गया। स्वामी जी के पूरे शरीर पर छाले पड़ गये थे तथा सर्दी में भी गर्मी अनुभव करते थे।

अजमेर आने पर पीर जी ने जांच करके स्पष्ट कहा कि **विष दिया गया है। स्वामी जी ने जल पीया, कटोरे में मूत्र किया जो कोयले के समान काला था।** प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी इस जीवन चरित के इतिहास दर्पण के अन्तर्गत पृष्ठ 655 पर लिखते हैं कि—

(1) ऋषि जब जोधपुर आने लगे तो सभी शुभचिंतकों ने वहां जाने से रोका। प्राणों के निर्मोही दयानन्द ने किसी की एक न सुनी। शीश तली पर रखकर जोधपुर जाने की ठान ली।

(2) ऋषि के जोधपुर पहुंचाने के लिए 26 दिन बाद जसवंत सिंह महाराजा जोधपुर दर्शनार्थ पधारे। यह भी एक समझने वाला तथ्य है।

(3) शाहपुर के श्री नाहरसिंह तथा अजमेर के कई भक्तों ने कहा कि आप वहां जा रहे हैं, वेश्यागमन, व्यभिचार का खंडन मत करना। यह तथ्य भी सामने रखना होगा तथा ऋषि ने इन्हें भी उत्तर दिया वह भी ध्यान में लाना होगा।

(4) महाराजा प्रतापसिंह के जीवन चरित्र में भी स्वामी जी का कहीं वर्णन तक न होना भी इस बात को बल देता है। यहाँ तक कि उनके किसी लेख में स्वामी जी का नाम तक नहीं मिलता।

(5) सर प्रतापसिंह अंग्रेज का पिट्ठू था, ऋषिभक्त नहीं। अंग्रेज ने अपने सबसे बड़े चाटूकार निजाम हैदराबाद से भी कहीं अधिक उपाधियाँ सर प्रतापसिंह को दीं। ऋषिभक्त पर तो अंग्रेज मोहित नहीं हो सकता था।

(6) राजा के सब चाकर आज्ञाकारी और विश्वस्त होते हैं। महर्षि तो शाहपुर के दिए सब चाकरों को निकम्मा बताते हैं। यह बात ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन के पृष्ठ 422-423 पर अंकित है।

(7) जिस डॉ. अली मर्दान खान से जोधपुर में उपचार कराया गया था, वह चाटूकार तथा तृतीय श्रेणी का सहायक डॉक्टर था। उसने जान-बूझकर ऐसा उपचार किया कि स्वामी जी बच न सकें।

(8) ऋषि की रुग्णता का समाचार बाहर न निकालने देना भी उनके दोष का कारण रहा। महर्षि की सारी योजना बनाने वाला राजपरिवार मजे से महलों में सोता रहा। स्वामी जी को रोग-शय्या पर छोड़ महाराज प्रताप सिंह घुड़दौड़ के लिए पूना चले गए।

(9) स्वामी जी को अन्तिम समय अजमेर लाने वाले जेठमल जी ने कविता में लिखा **रोम-रोम में विष व्याप्त हो गया।** यह तो साक्षात् सत्य है जिसने अपनी आंखों से देखा उसका ही लिखा है।

(10) जब पंडित लेखराम जी स्वामी जी के जीवन की खोज में जोधपुर गए तो राजा के गुप्तचर छाया की तरह पंडित जी के पीछे क्यों रहे? खोज में बाधा क्यों डाली?

(11) **सर प्रतापसिंह स्वयं कहते थे-कोई नन्हीं को भगतन व वैष्णव बताकर सिकरने में लगा है तो जोधपुर में विष देने की घटना को सिरे से खारिज कर रहा है, राजपरिवार का एक ट्रस्ट है, उन्होंने मुट्ठी में कई लेखक कर रखे हैं, ऐसा सुनने में आया है।** एक दैनिक में विषपान की घटना प्रचारित करने का दोष पंजाब के महात्मा दल पर लगाया गया। लाहौर मांस पार्टी के स्तम्भ प्रतापसिंह की निन्दा के लिए यह प्रचार किया गया।

झूठ झूठ ही होता है

जब राजस्थान के एक दैनिक में यह लेख छपा तो राजस्थान के किसी व्यक्ति ने इस मिथ्या कथन का प्रतिवाद नहीं किया। तब प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने लिखा कि पं० लेखराम जी का ग्रन्थ छपने से पूर्व जोधपुर में अकाल पड़ा था। तब लाला लाजपतराय जी ने लाला दीवानचन्द को जोधपुर सहायता कार्य के लिए भेजा। उस समय सर प्रतापसिंह ने स्वयं जोधपुर में ऋषि जी को विष देने की घटना पर बड़ा दुःख प्रकट किया था। यह बात लाला दीवानचन्द जी की आत्मकथा मानसिक चित्रावली में दी गई है। इस दीवानचन्द ने दुनिया के नौ महापुरुष नामक उर्दू पुस्तक में ऋषि को जोधपुर में विष दिए जाने की चर्चा की है नन्हीं को भी वेश्या लिखा है।

(12) राजस्थान के यशस्वी इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने भी ऋषि के बलिदान का कारण विषपान ही माना है। राधास्वामी मत दयालबाग के गुरु हुजूर महाराज भी लिखते हैं कि जसवंत सिंह की बद्खुला तबायफ नन्हीं जान। .....नन्हीं जान के प्रतिशोध का परिणाम था कि दयानन्द के दूध में विष पीसकर शक्कर डालकर दिया गया और वह घातक सिद्ध हुआ।

(13) अजमेर के हकीम पीर अमाम अली जी ने स्पष्ट कहा था कि संखिया दिया गया है।

(14) राजस्थान के तत्कालीन इतिहासकार जगदीश सिंह गहलोत, मुंशी देवीप्रसाद, नैनुरम ब्रह्मभात्त आदि सब एक स्वर से ऋषि के बलिदान का कारण विष मानते हैं। चांद के प्रसिद्ध मारवाड़ अंक से ऋषि के विषपान के प्रमाण जिज्ञासु जी ने दिए हैं।

(15) ऋषि को मारने के षड्यन्त्र में कई व्यक्ति सम्मिलित थे। इनमें से एक व्यक्ति खुल्लमखुल्ला ऋषि की हलाकत (हत्या) का श्रेय लेते हुये गर्व से लिखता है कि उसे तो अल्लाह से ऋषि के मारे जाने की पहले से जानकारी मिल चुकी थी। मिर्जई मत का पैगम्बर मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी ऋषि की हलाकत को अपनी नुब्बुवत का आसमानी निशां प्रमाण था। उसने अपनी आसमानी किताब हकीकत उल वाही के 51-52 पृष्ठों की निर्देशिका के पृष्ठ 24 पर दो बार महर्षि के मरवाने का श्रेय बड़ी शान से लेता है। इस पंथ का पालन-पोषण अंग्रेज सरकार ने किया।

(16) वारहट किशनसिंह जी का जीवन और राजपूताना इतिहास अभी छपा है इसमें इस प्रकार लिखा है— **ब्राह्मणों ने इनके रसोईदार को मिलाकर स्वामी दयानन्द सरस्वती को जहर दिलाया।**

(17) डॉ. भवानीलाल भारतीय जी ने नन्हीं को महाराज की उपपत्नी कहा है। यदि इसे सत्य मान लें तो भी जोधपुर महाराज की उपपत्नी के इस अपराध में शामिल होना सिद्ध होता है, क्योंकि सबने माना है कि **एक मुख्य पात्र सबने माना है तो राजपरिवार विष दिए जाने के षड्यन्त्र से अलिप्त कैसे हो गया? यदि वह उपपत्नी थी तो सर प्रताप सिंह ने उसे जसवंत सिंह के निधन पर राजभवनों से उसे क्यों निकलवाया।**

शेष पृष्ठ 8 पर....

thearyasamaj.org

* ओ३म् *

उपासना व नाड़ियों में ध्यान

-: मन्त्र :-

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः।
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्याऽअध्याभरत्॥ (यजु० 11/4)

अर्थ—(युञ्जानः) योग को करने वाले मनुष्य (तत्त्वाय) तत्त्व अर्थात् ब्रह्मज्ञान के लिये (प्रथमं मनः) सर्वप्रथम अपने मन को परमेश्वर में युक्त करते हैं। तब (सविता) परमेश्वर उनकी (धियम्) बुद्धि को अपनी कृपा से अपने में युक्त कर लेता है (अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य) फिर वे परमेश्वर के प्रकाश को निश्चय करके (अध्याभरत्) यथावत् धारण करते हैं। (पृथिव्याः) संसार में योगी का यही प्रसिद्ध लक्षण है।

युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्वि श्लोकऽएतु पथ्येव सूरेः।
शृण्वन्तु विश्वेऽअमृतस्य पुत्राऽआ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः॥

(यजु० 11/5)

अर्थ—उपासना का उपदेश देने वाले और ग्रहण करने वाले, दोनों के प्रति परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है कि जब तुम (पूर्व्यम् ब्रह्म) सनातन ब्रह्म की (नमोभिः) सत्य प्रेम-भाव से अपने आत्मा को स्थिर करके नमस्कारादि रीति से उपासना करोगे तब मैं तुमको आशीर्वाद देऊँगा कि (श्लोकः) सत्य कीर्ति (वाम्) तुम दोनों को (एतु) प्राप्त हो। किसके समान? (पथ्येव सूरेः) जैसे परम विद्वान् को धर्म योग यथावत् प्राप्त होता है इसी प्रकार तुमको सत्य सेवा से सत्य कीर्ति प्राप्त हो। फिर भी मैं सबको उपदेश करता हूँ कि (अमृतस्य पुत्राः) हे मोक्ष मार्ग के पालन करने वाले मनुष्यो! (शृण्वन्तु विश्वे) तुम सब लोग सुनो कि (आ ये धामानि दिव्यानि) जो दिव्य लोकों अर्थात् मोक्षसुख को (आतस्थुः) पूर्व प्राप्त हो चुके हैं उसी उपासना योग से तुम लोग भी उन सुखों को प्राप्त हो, इसमें सन्देह मत करो। इसीलिये (युजे) मैं तुमको उपासना योग में युक्त करता हूँ।

(साभार-वेदस्वाध्याय) —आचार्य बलदेव

सवा करोड़ गायत्री, चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं योगसाधना शिविर

गुरुकुल यमुनातट मंझावली जिला फरीबाद हरयाणा में 21वें वार्षिक महोत्सव के उपलक्ष्य में **'सवा करोड़ गायत्री, चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं योगसाधना शिविर'** का आयोजन धर्ममेघ समाधि से अलंकृत श्रद्धेय श्री स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में शनिवार 4 अक्तूबर 2014 से रविवार 8 मार्च 2015 तक विशिष्ट आयोजनों के साथ सम्पन्न होगा।

इस कार्यक्रम का शुभारम्भ **श्री महाशय धर्मपाल जी (एमडीएच), आचार्य बालकृष्ण जी एवं श्री स्वामी कर्मवीर जी** के पवित्र करकमलों से हो गया है।

इस आयोजन में भाग लेने वाले याज्ञिक एवं साधक महानुभावों से नम्र निवेदन है कि अपने साथ भारतीय वेशभूषा परिधान के रूप में लावें, पुरुष वर्ग धोती कुर्त्ता तथा महिलायें साड़ी (शाटिका) अपने साथ लावें, यदि पीत वस्त्र हो तो उत्तम होगा तथा अपने साथ ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र एवं चाकू, टार्च, नोटबुक, लेखनी और सत्यार्थप्रकाश साथ में अवश्य लावें।

शिविर में भाग लेने वाले महानुभाव कम से कम सात दिन का अवसर निकालकर अवश्य पधारें, इसके लिए शुद्ध शाकाहारी सात्त्विक आहारसेवी होना आवश्यक है। अण्डा, मांस, शराब, धूम्रपान आदि से ग्रस्त व्यक्ति भाग नहीं ले सकेंगे, परन्तु इन व्यसनों को सदा के लिये छोड़ने का व्रत लेने वाले जनेऊधारी व्यक्ति भाग ले सकेंगे। शिविरार्थियों को निर्धारित दैनिक दिनचर्या में रहना भी आवश्यक होगा। शिविरार्थियों पर कोई शुल्क निर्धारित नहीं है तथा जो साधक शिविरार्थी अपने सामर्थ्यानुसार जितना उचित समझें सहयोग कर सकते हैं।

निवेदक :-

आचार्य जयकुमार 09718579333
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती 09868855155

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आयोजित स्वच्छता अभियान

हरिद्वार, "महात्मा गांधी का जीवन प्रारंभ से ही संघर्षपूर्ण रहा, उन्होंने इसी संघर्ष को अपने संपूर्ण जीवन का आधार बनाया और स्वतन्त्रता संग्राम में अपने जीवन को आहूत कर दिया। "2 अक्टूबर" के अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आयोजित स्वच्छता अभियान के शुभारंभ पर कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार सभा को संबोधित कर रहे थे। कुलपति ने कहा कि महात्मा गांधी ने देश की स्वतन्त्रता से भी अधिक देश की स्वच्छता को महत्त्व दिया था और देश के वर्तमान प्रधानमंत्री ने देश को स्वच्छ करने का यह अभियान चलाकर पूरे विश्व का ध्यान इस ओर आकर्षित किया है। 2 अक्टूबर की तिथि तो संकेत मात्र है पर हमें अभियान को अपने जीवन में उतारना चाहिए।

कुलसचिव प्रो. विनोद कुमार ने कहा कि महात्मा गांधी भारतीय संस्कृति के एक ऐसे आदर्श पुरुष थे, जिन्होंने जीवन के हर क्षेत्र को भारतीय आदर्श से ओत-प्रोत देखा और किया। महात्मा गांधी ने जहां देश को जातिप्रथा से मुक्त कराने का प्रयास किया वहीं उन्होंने संपूर्ण देश को स्वच्छ बनाने का प्रयास भी किया और यह कार्य उन्होंने स्वयं प्रारम्भ किया इसी प्रकार देश के द्वितीय प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने देश को एक करने का संदेश देकर स्वाभिमान से जीना सिखाया तथा जय जवान जय किसान का नारा देकर भारत देश को चहुंओर से सुरक्षित एवं समृद्ध बनाने का संदेश दिया।

कुलपति एवं कुलसचिव के नेतृत्व में सभी शिक्षकों, शिक्षकेत्तर कर्मचारियों तथा छात्रों ने सिंहद्वार से अमन चौक तथा संपूर्ण गुरुकुल परिसर में सफाई अभियान चलाया। इस अवसर पर वित्ताधिकारी राजेन्द्र मिश्रा, शशिकान्त शर्मा, डॉ. पंकज कौशिक, डॉ. सी.पी. खोखर, डॉ. आर.डी.कौशिक, डॉ. प्रदीप कुमार जोशी, कुलभूषण शर्मा, रूपेश पन्त, सत्यप्रसाद भट्ट, डॉ. ईश्वर भारद्वाज, डॉ. प्रभात सेंगर, डा. विनय सेठी, डॉ. महेन्द्र असवाल, बलजीत सिंह बिड़ला तथा अन्य अनेक शिक्षक, कर्मचारी उपस्थित थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में

10वां आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) द्वारा मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से 10वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन 23 नवम्बर, 2014 को आर्यसमाज स्टेशन रोड, आणंद, जिला आणंद (गुजरात) में आयोजित किया जाएगा। जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वेबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं।

पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम 200 रूपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न कर 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' (पं.) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1' के पते पर भेज दें। जिन आर्यबंधुओं के आवेदन पत्र 3 नवम्बर, 2014 तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक-युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे।

सम्मेलन स्थल पर भी आयोजन के दिन भी तत्काल पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध होगी। तत्काल पंजीकरण कराने वाले आर्य युवक-युवतियों के नाम एवं विवरण सभा की वेबसाइट पर 10 दिसम्बर 2014 के बाद देखे जा सकेंगे।

-अर्जुनदेव चढ्ढा, राष्ट्रीय संयोजक मो. 09414187428

thearyasamaj.org

ईश्वर स्तुति के लाभ

❑ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

ईश्वर न्यायकर्त्ता है वह मनुष्यों द्वारा अपनी स्तुति के भूखे नहीं हैं। ना ही परमपिता परमेश्वर किसी भी मनुष्य द्वारा स्तुति गान किए जाने पर अपनी न्यायव्यवस्था को भंग करके उसे उसके दुष्कर्मों के लिए दण्ड देने के स्थान पर अच्छी नियति प्रारब्ध के रूप में पुरस्कार नहीं देते। हर मनुष्य को अपने किए प्रत्येक कर्म का फल दंड वा पुरस्कार के रूप में अवश्य मिलता है। योगेश्वर श्रीकृष्ण ने कहा, **'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'** यह जानने मानने के उपरान्त एक स्वाभाविक प्रश्न उत्पन्न होता है कि फिर मनुष्य ईश्वर की स्तुति क्यों करे और उसका लाभ क्या है? वैसे भी आज के तथाकथित प्रगतिशील भौतिकतावादी युग में मनुष्य कोई भी काम अपने स्वार्थ के बिना नहीं करना चाहता। अत एव ईश्वर स्तुति से होने वाले लाभ पर चिंतन करते हैं।

ईश्वर स्तुति के लाभ जानने से पूर्व हमें इसका अर्थ समझना होगा। महर्षि दयानन्द आर्योद्देश्यरत्नमाला में स्तुति को परिभाषित करते हुए लिखते हैं, **'जो ईश्वर या किसी दूसरे पदार्थ के गुण ज्ञान कथन श्रवण और यथारूप सत्य भाषण करना है, वह स्तुति कहलाती है।'** स्तुति की इस परिभाषा को जानने के उपरान्त हम ईश्वर स्तुति के लाभों पर विचार करते हैं।

ईश्वर स्तुति करते हुए प्रथम लाभ यह है कि इससे हमें ईश्वर के सच्चे सही स्वरूप अर्थात् ईश्वर को सच्चिदानन्द, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता मानने के बाद हम अपने जीवन में पाखण्डों, अंधविश्वासों से बच जाते हैं। ईश्वर के स्वरूप का बोध होते ही हमें कोई भी तथाकथित गुरु, बाबा अपने पाखण्ड जाल में फँसाकर हमारा शोषण नहीं कर सकता। स्तुति करने के लिए आवश्यक सत्य स्वरूप का बोध अज्ञान के अन्धकार को दूर कर देता है।

ईश्वर स्तुति का दूसरा लाभ ईश्वर की स्तुति करने वाले स्तोता के मन में स्तुति करते हुए आत्मा में आर्द्रता का भाव उत्पन्न होता है। आत्मा में आर्द्रता का भाव उत्पन्न होने से मनुष्य के मन में ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव को जानने मानने की स्वाभाविक इच्छा उत्पन्न होती है और ऐसी स्थिति में मनुष्य अपनी अन्तरात्मा की आवाज अर्थात् ईश्वरीय प्रेरणा को सुनने की इच्छा उत्पन्न होती है। मनुष्य के जीवन में यदि यह गुण उत्पन्न हो जाता है तो वह स्वाभाविक रूप से बहुत से दोषों से छूटकर पाप करने से बच जाता है। पाणिनि अष्टाध्यायी में मनुष्य को **'स्वतन्त्र कर्त्ता'** कहा गया है अर्थात् मनुष्य किसी भी कार्य को करने, ना करने अथवा किसी अन्य प्रकार से करने के लिए स्वतंत्र होने के कारण अपने द्वारा किये गए प्रत्येक कर्म का कर्ता और कर्ता होने के कारण भोक्ता भी है। किसी भी कार्य को करने से पूर्व मनुष्य के मन में एक संकल्प और विकल्प की स्थिति पैदा होती है। यह कर्ता पर निर्भर करता है कि वह किये जाने वाले कर्म को काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि की किसी कलुषित भावना से करता है या फिर निःस्वार्थ भाव से परोपकार के लिए करता है। संकल्प विकल्प की स्थिति में यह निर्णय इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति ईश्वरीय अन्तःप्रेरणा यानि अपनी अन्तरात्मा की आवाज को सुन रहा है अथवा नहीं। ईश्वर स्तुति करने से स्तोता के मन में उत्पन्न आर्द्रता के भाव से अन्तरात्मा की आवाज ईश्वरीय प्रेरणा सुनने की स्वाभाविक इच्छा जागृत हो जाती है। वह परमपिता परमेश्वर सर्वव्यापी होने के साथ-साथ अति सूक्ष्म रूप में सर्व अन्तर्यामी भी है। योगेश्वर कृष्ण ने गीता में कहा है, **'ईश्वर सर्वभूतानां हृदयेशे तिष्ठति'** सर्व अन्तर्यामी ईश्वर प्रत्येक कार्य से पूर्व उत्पन्न संकल्प और विकल्प की स्थिति में सच्चे मित्र होते हुए **'इन्द्रस्य युज्य सखा'** के रूप में हमें निःस्वार्थ भाव से परोपकार के कार्य करने की प्रेरणा देते हैं। यदि हम ईश्वर स्तुति करते हैं हमारी आत्मा में आर्द्रता का भाव उत्पन्न हो चुका है तो हम ईश्वरीय प्रेरणा को सुनने में सक्षम हो जाते हैं और फिर ईश्वरीय प्रेरणा को सुनकर ईश्वरीय आज्ञानुसार जीवन जीते हैं तो सदैव धर्म के मार्ग पर चलते हैं। धर्म की परिभाषा में कहा गया है कि ईश्वरीय आज्ञा का यथावत् पालन ही धर्म कहलाता है। इस तरह ईश्वर स्तुति से हमें धर्म के मार्ग का ज्ञान होता है।

ईश्वर स्तुति का तीसरा लाभ जीवन से अहंकार के भाव का खत्म हो जाता है। ईश्वर की स्तुति करते हुए जब हम प्रभु की प्रभुता और हम मनुष्यों की लघुता का बोध करते हैं और ईश्वरीय गुण कर्म स्वभाव की चर्चा करते समय उसकी असीम सत्ता को स्वीकार करते हैं तो हमारे मन से अहंकार का भाव लोप हो जाता है। अहंकार अभिमान या घमण्ड एक ऐसी बुराई है जो जीवन में किसी न किसी अच्छाई से जन्म लेती है और आने के बाद सबसे पहले उसी अच्छाई को खा जाती है। अभिमानी का विनाश निश्चित होता है।

अकड़ू यूं तन कर खड़ा,
लगे ठूंठ सा खूब।
आँधी में औंधा गिरा,
बची रही लघु दूब॥

ईश्वर स्तुति का चौथा लाभ जिन गुणों के कारण हम परमपिता परमेश्वर की स्तुति करते हैं उन गुणों के प्रति ग्राह्यता का भाव पैदा होता है। जो ईश्वरीय गुण दयालुता, पालन करना, उत्पत्तिकर्त्ता, न्याय आदि जो हमें अच्छे लगते हैं और जिनके कारण हम ईश्वर की स्तुति करते हैं, धीरे-धीरे उन गुणों का हमारे जीवन में भी समावेश हो जाता है। इन ईश्वरीय गुणों दया, न्याय, पालन, उत्पत्ति आदि को धारण करने के बाद मनुष्य का जीवन अनुकरणीय हो जाता है और मनुष्य धर्म के मार्ग पर चलता हुआ अपने जीवन के प्रत्येक लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होता है। ईश्वर स्तुति करने के बाद स्तोता मनुष्य में यह चारों गुण ईश्वर के सच्चे स्वरूप का बोध उसकी आत्मा में आर्द्रता से अन्तरात्मा की आवाज सुनने की प्रेरणा, अभिमान का नाश और ईश्वरीय गुणों के प्रति ग्राह्यता उत्पन्न होने से मनुष्य ईश्वर की उपासना के लिए सक्षम हो जाता है।

दीपावली का सन्देश

सूबे० करतारसिंह आर्य

दीपावली फिर आ गई, देने यह सन्देश।
भगत बनो जगदीश के, परहित करो हमेश॥
परहित करो हमेश, परोपकारी बन जाओ।
मानव तन अनमोल, इसे मत व्यर्थ गंवाओ॥
शुभ कर्मों से जीव, मनुष्य का तन पाते हैं।
वेद शास्त्र ऋषि मुनि, संत जन दर्शाते हैं॥ 1॥

जो मानव संसार में, करते हैं शुभ कर्म।
वही निभाते हैं फक्त, पावन वैदिक धर्म॥
पावन वैदिक धर्म निभाते, सुख पाते हैं।
नर-नारी यशगान सदा, उनके गाते हैं॥
मानवत्व के पुञ्ज, जगत् में कहलाते हैं।
दुनिया में सम्मान, भाग्यशाली पाते॥ 2॥

अंग्रेजों का जिस समय, यह भारत था दास।
करते थे अन्याय खल, यहाँ विधर्मी खास॥
यहाँ विधमी खास, गऊ हत्या करते थे।
भारतवासी बहुत, पापियों से डरते थे॥
छुआछूत का, जन्म जाति का जोर यहाँ था।
खाओ पीयो मौज उड़ाओ, शोर यहाँ था॥ 3॥

भारत पर भगवान ने, की थी दया अपार।
भेजे ऋषि दयानन्द जी, किया वेदप्रचार॥
किया वेदप्रचार किसी का खौप न खाया।
आजादी का नाद बजाया, जगत् जगाया॥
स्वयं किया विषपान, हमें पीयूष पिलाया।
दीपावली के दिन था, जीवन दीप बुझाया॥ 4॥

भारत में अगर आते नहीं, देव दयानन्द।
कभी गुलामी का सुनो, कट ना पाता फन्द॥
कट न पाता फन्द, दुःखी रहते सब भारी।
हमें सताते रोज अधर्मी, अत्याचारी।
भारत वीरों जगत् गुरु के सब गुण गाओ।
पालो वैदिक धर्म, विश्व को स्वर्ग बनाओ॥ 5॥

भेंटकर्त्ता :
सूबेदार करतारसिंह
आर्य, सेवक आर्यसमाज
गोहाना मण्डी
(सोनीपत)

thearyasamaj.org

भारत का राष्ट्रीय पर्व दीपावली

❑ कृष्ण वोहरा, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, 641, जेल ग्राउण्ड, सिरसा

जब-जब मिलकर दीप सब, जल उठें एक बार।
तब-तब दीवाली हुई, हुई तमस की हार॥

प्रसिद्ध कवि शशिकान्त द्वारा रचित ये पंक्तियां दीपावली पर्व के सन्देश को सार्थक करती हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने अपने चौदह वर्ष के वनवास के समय वनवासियों को संगठित किया। नल, नील, अंगद, हनुमान एवं सुग्रीव को मित्र बनाया। फिर उनकी सहायता से महापराक्रमी रावण तथा उसके कुटुम्ब का संहार करके यह सिद्ध कर दिया कि चाहे कितनी काली अंधेरी रात हो, प्रात:काल होते ही अंधेरा समाप्त हो जाता है। एक नन्हा-सा दीपक भी अन्धकार को समाप्त करने में सक्षम है।

नन्हीं सी लौ ने किया, तब चहुँदिश उजियार।
देख हौसला दीप का, कांप उठा अंधियार॥

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन व चरित्र हमारे लिए अनुकरणीय है। उन्होंने पितृभक्त व मातृभक्ति के उदाहरण प्रस्तुत किए जो समूची मानवता को युगों-युगों तक अमर सन्देश देते रहेंगे। पिता दशरथ के वचनों का पालन करने के लिए राजपाट त्यागकर 14 वर्षों के लिए वनों में चले गए। कभी भी माता कैकेयी के प्रति एक भी अपशब्द नहीं कहा। वह मर्यादा, वीरता, धैर्य व धर्म की ऐसी मिसाल है जिसे हम कभी भूल नहीं सकते। भाइयों के प्रति उनका प्रेम अगाध था—

कवि आचार्य भगवत दूबे ने सत्य कहा है—

राम से पहचान है, इस देश हिन्दुस्तान की।
धड़कने बनकर बसे, जन-जन में राघव-जानकी॥

दीपावली के आने से बहुत दिन पहले भारतवासी एवं विदेशों में रहने वाले भारतीय अपने-अपने घरों, दुकानों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों की मन लगाकर सफाई करते हैं। दीपावली के दिन इन्हें दीयों, मोमबत्तियों एवं लड़ियों से सजाते हैं। ऐसी मान्यता है कि रात के समय धन व वैभव की देवी लक्ष्मी हर घर, दुकान व प्रतिष्ठान में आकर आशीर्वाद देती है। दीपावली के दिन बाजारों की रौनक देखते ही बनती है। मित्रों, सम्बन्धियों एवं पड़ोसियों को शुभकामनाएँ दी जाती है। मिठाइयों का आदान-प्रदान किया जाता है। रात के समय चारों ओर पटाखों का शोर सुनाई पड़ता है। छोटे-छोटे बच्चे, किशोर युवा एवं वृद्ध सभी फुलझड़ियों, पटाखों को जलाकर आनन्द से भावविभोर हो उठते हैं। इस प्रकार दीपों की जगमगाहट, आतिशबाजी की गर्जना और परस्पर बधाई सन्देशों का होना ही यह संकेत करता है कि दीपावली भारत का राष्ट्रीय पर्व है।

- क्या कभी हमने सोचा है कि भारत में लाखों निर्धन परिवार जिनके घरों में आज की कमरतोड़ महंगाई के समय दो समय भोजन नहीं बनता, उनके लिए कैसी दीवाली?
- क्या हमने कभी ऐसा सोचा है कि इन निर्धन परिवारों के पढ़े-लिखे युवाओं को जो बेरोजगारी की पीड़ा को अनेक वर्षों से सह रहे हैं, उनके लिए कैसी दीवाली?
- क्या कभी हमने सोचा है-कश्मीर के चार लाख कश्मीरी हिन्दुओं को जिनके घरों में बीस सालों से दीये नहीं जले। ये कश्मीरी हिन्दू अपने ही भारत देश में शरणार्थी की तरह जिन्दगी बिताने के लिए मजबूर हैं। इनके लिए कैसी दीवाली?
- अब नरेन्द्र मोदी-देश के प्रधानमंत्री निश्चित रूप से कुछ ऐसे कदम उठायें ताकि इन चार लाख कश्मीरी हिन्दुओं की कश्मीर में घर वापसी हो। रोजगार के साधन जुटे, निर्धनता दूर हो।
- दीपावली के पर्व पर आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती को निर्वाण प्राप्त हुआ था, उन्हें कोटि-कोटि नमन।

दीपावली की आप सबको शुभकामनाएँ

एक दीप बाहर धरें, जग पाएं आलोक।
एक दीप भीतर धरें, रोशन हो निज लोक॥
दीप जलें हर घर में, हो यह सुखी समाज।
गौरव से मिल कह सकें, मनी दिवाली आज॥

वेदों के पथ पर चलो

पं. नन्दलाल 'निर्भय'

जगत् गुरु दयानन्द थे, ईश्वरभक्त महान्।
देशभक्त धर्मात्मा, वेदों के विद्वान्॥
वेदों के विद्वान्, सत्यवादी तपधारी।
मानवता के पुंज, साहसी अरु ब्रह्मचारी॥
किया वेदप्रचार, न कष्टों में घबराए।
दुखिया दीन अनाथ, हर्ष से गले लगाए॥

अंग्रेजों का राज्य था, भारत था परतन्त्र।
दुष्ट विधर्मी लोग नित, रचते थे षड्यन्त्र॥
रचते थे षड्यन्त्र, दु:खी थी जनता भारी।
लाखों गऊएं यहाँ, नित्य जाती थी मारी॥
विधवाओं का करुण-क्रन्दन चहुँओर था।
दानव दल का यहाँ, सुनो तब बहुत जोर था॥

स्वामी जी ने गर्ज कर, कहा सुनो धर ध्यान।
बंधो संगठन सूत्र में, यदि चाहो कल्याण॥
यदि चाहो कल्याण, सभी मिलकर कदम बढ़ाओ।
पापी हैं अंग्रेज, खलों को मार भगाओ॥
गऊ गुणों की खान, करो गऊओं की सेवा।
जाति-पाति दो मिटा, मिलेगी पावन मेवा॥

नारी की पूजा करो, सच्ची देवी मान।
नर्क वहाँ होता जहाँ, नारी का अपमान॥
नारी का अपमान, करें वे दु:ख पाते हैं।
हो जाता है पतन, अनाड़ी पछताते हैं॥
रहता देश गुलाम, अगर ऋषि यहां न आते।
ऋषियों के सुत-सुता, कभी भी सुख ना पाते॥

दीपावली यह दे रही, हमें आज सन्देश।
जुटो वेद-प्रचार में, तजो ईर्ष्या-द्वेष॥
तजो ईर्ष्या-द्वेष, जगत् में नाम कमाओ।
बनकर श्रद्धानन्द, शुद्धि का चक्र चलाओ॥
लेखराम, गुरुदत्त बनो, निज धर्म निभाओ।
स्वयं आर्य बनों, विश्व को आर्य बनाओ॥

-पं० नन्दलाल 'निर्भय'
पत्रकार, भजनोपदेशक
आर्यसदन बहीन, जनपद
पलवल (हरयाणा)
मो० 9813845774

जय भारत भाग्य विधाता....

टेक-धन्य ऋषिवर तुम ही थे, नवभारत के निर्माता।
मातृभूमि के रक्षक बनकर, वैदिक ध्वज लहराता।
जय भारत भाग्य विधाता॥

1. गुरुवर का आदेश मानकर, आगे कदम बढ़ाये।
पाखण्डों का जाल बिछा था, उसको दूर भगाये।
दीन-दु:खी लाचार जनों को, अपने गले लगाता।
जय भारत भाग्य विधाता॥

2. जो माता की रक्षा करते हैं, लगते सबको प्यारे।
कहा ऋषि ने सुनो देश के, तुम अनमोल सितारे।
जीवन अपना अर्पण करके, जीवन सफल बनाता।
जय भारत भाग्य विधाता॥

3. जगह-जगह पर ऋषिवर ने फिर, जमकर धूम मचाई।
जाग गये भारतवासी सब, लेकर फिर अंगड़ाई।
आजादी का बिगुल बजाकर, सबको राह दिखाता।
जय भारत भाग्य विधाता॥

4. आज दु:खी है जनता ऋषिवर, आकर इन्हें बचाओ।
पाखण्डों के इस दलदल से, आकर इन्हें छुड़ाओ।
आर्यसमाज पुकार रहा है, 'सरस' तेरे गुण गाता।
जय भारत भाग्य विधाता॥

-सुरेन्द्र कुमार 'सरस', सूर्यनगर, गोहाना रोड,
रोहतक मो० 9254069111

thearyasamaj.org

विद्यार्थियों का सम्मान

आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत के विद्यार्थी नियमित रूप से खेलों तथा शिक्षा की प्रतिस्पर्धाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं, ऐसे बालकों का विद्यालय की ओर से नियमित सम्मान किया जाता है। इसी कड़ी में ब्लॉक व जिला स्तर पर अण्डर-19 खो-खो की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, अण्डर-17 ने जिला स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इन खिलाड़ियों का 500-500 रुपये व किट देकर सम्मान किया गया। योगा में अण्डर-14 में शिवमपाल प्रथम, अंशु द्वितीय, आयुष तृतीय को 200-200 रुपये से सम्मानित किया गया। सी.बी.एस.ई. नॉर्थ जोन ताईक्वांडो में अण्डर-19,60 किलो ग्राम भार वर्ग में सतीश शर्मा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया तथा नेशनल ओपन में गोल्ड मैडल प्राप्त किया। भारोत्तोलन में राज्य स्तरीय ओपन प्रतियोगिता में मनीष मिश्रा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

01.10.2014 को गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सैकेण्डरी स्कूल मॉडल टाउन में आयोजित राज्य स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में जो 'पर्यावरण और वन्य जीवन' पर आयोजित की गई, उसमें रमन 9B व एकांश 10A ने क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया। विद्यार्थियों की इस उपलब्धि पर पूरी कार्यकारिणी, प्राचार्या ने डीपीई श्री जगदीश चहल व विज्ञान अध्यापिका विम्मी मैडम को बधाई दी।

-प्रिंसिपल, आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत

वेदप्रचार मण्डल (हिसार) की महत्त्वपूर्ण बैठक सम्पन्न

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार 21.09.2014 को वेदप्रचार मण्डल की महत्त्वपूर्ण बैठक प्रधान श्री रामकुमार आर्य की अध्यक्षता में हुई। सर्वप्रथम प्रधान जी द्वारा अपने खर्च पर अनमोल वचन लिखकर कलेण्डर छपवाकर 100 रुपये का सैट प्रचारार्थ बांटने का निर्णय लिया। इस नेक कार्य के लिए सभी सदस्यों ने प्रधान जी का धन्यवाद किया। समाज में बढ़ती हुई शराबखोरी, अन्धविश्वास, पाखण्ड पर चिन्ता व्यक्त की। सर्वसम्मति से अन्धविश्वास, पाखण्ड व नशाखेरी के खिलाफ मण्डल की ओर से पारिवारिक सत्संग के माध्यम से प्रचार करने का निर्णय लिया। पोलिथिन के खिलाफ भी प्रचार किया जाएगा।

इस बैठक में मंडल के संरक्षक स्वामी सर्वदानन्द, वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री, बौद्धिक अध्यक्ष आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी, सु० हरिसिंह आर्य, शोभाचन्द आर्य, कोषाध्यक्ष सत्यप्रकाश मित्तल, इंस्पेक्टर निहाल सिंह आर्य, कप्तान चन्दरसिंह आर्य, सीताराम आर्य, महेन्द्र आर्य आदि उपस्थित थे।

-कर्नल ओमप्रकाश आर्य, मंत्री
वेदप्रचार मण्डल, हिसार

मा० सोमनाथ आर्य पुनः प्रधान बने

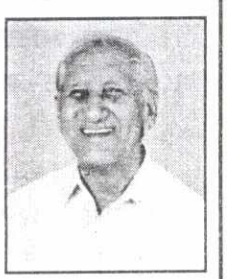

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव का वार्षिक चुनाव रविवार को आर्यसमाज भीमनगर में श्री ओमप्रकाश कालड़ा जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ और सर्वसम्मति से मा० सोमनाथ जी को पुनः प्रधान बनाया गया और अपना मंत्रिमंडल एवं कार्यकारिणी गठन करने का अधिकार भी दे दिया गया। प्रधान मा० सोमनाथ जी ने अन्य अधिकारियों का चुनाव इस प्रकार किया—

प्रधान-मा० सोमनाथ आर्य, उपप्रधान-श्री नरेन्द्र कालड़ा, महामंत्री-श्री प्रभुदयाल चुटानी, कोषाध्यक्ष-श्री नरवीरलाल चौधरी, मन्त्री-श्री बलदेव कृष्ण गुगलानी, प्रेस सचिव-श्री कन्हैयालाल आर्य, भण्डार अध्यक्ष-श्री एल.आर. मंगला, लेखानिरीक्षक-ओमप्रकाश मनचन्दा।

—प्रभुदयाल चुटानी, महामंत्री 9818781926

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज लोहाणा जिला रेवाड़ी	25 से 26 अक्तूबर 2014
2.	आर्यसमाज चरखी दादरी जिला भिवानी	8 से 9 नवम्बर 2014
3.	आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत	14 से 16 नवम्बर 2014
4.	आर्यसमाज बसई जिला गुड़गांव	14 से 16 नवम्बर 2014
5.	आर्यसमाज जीन्द शहर	21 से 23 नवम्बर 2014

—सभामन्त्री

सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

दिनांक 19 से 21 सितम्बर 2014 को वैदिक योगाश्रम न्यू पालम विहार में सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। आर्यजगत् के वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी (रोहतक) यज्ञ के ब्रह्मा थे। वेदपाठ गुरुकुल नोएडा की ब्रह्मचारिणियों ने किया। कार्यक्रम में अनेक यजमान सम्मिलित हुए वहीं मुख्य यजमान श्री सोमवीर आर्य थे जिन्होंने इस यज्ञ का आयोजन किया।

आचार्य जी ने सामवेद के मन्त्रों द्वारा बताया कि मनुष्य को परमानन्द की प्राप्ति हेतु बाह्य साधनों का सदुपयोग करना चाहिए। वेद ने तो सन्तान को भी यज्ञ हेतु प्राप्त करने का निर्देश दिया है। वेद-प्रचारक ऋषि दयानन्द जी ने कितने आर्यों को वेद का दीवाना बना दिया जो अपना धन वेद के यज्ञ व सत्संग में खर्च करते हैं। इस यज्ञ में अनेक नर-नारी भी उपस्थित हुये। कार्यक्रम बहुत ही ज्ञानवर्धक रहा।

भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें।

—सभामन्त्री

आत्मिक शांति के लिये शुद्धता से करें आह्वान
प्रसन्न हो आशीर्वाद देंगे भगवान

शुद्ध एम डी एच हवन सामग्री

शुभ दिनों, शुभ कार्यों एवं पावन पर्वों में शुद्ध घी के साथ, शुद्ध जड़ी-बूटियों से निर्मित एम डी एच हवन सामग्री का प्रयोग कीजिये। शुद्धता में ही पवित्रता है। जहां पवित्रता है वहां भगवान का वास है, जो एम डी एच हवन सामग्री के प्रयोग से सहज ही उपलब्ध है।

अलौकिक सुगंधित अगरबत्तियां

महाशियां दी हट्टी लि०
एम डी एच हाउस, 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 फोन : 5937987, 5937341, 5939609
ब्रांचेज : • दिल्ली • गाजियाबाद • गुड़गांव • कानपुर • कलकत्ता • नागौर • अमृतसर

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

thearyasamaj.org

विदेश में दूसरी बार 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में विदेश में दूसरी बार 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। यह आयोजन कनाडा के आर्यसमाज मारखम, टोरंटो के विशाल प्रांगण में बड़ी श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ। भारी संख्या में उपस्थित श्रोताओं ने जहाँ गायत्री के महत्त्व को समझा वहीं यज्ञ की महिमा को भी आत्मसात् किया।

अध्यात्म पथ के यशस्वी सम्पादक एवं प्रख्यात लेखक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विशाल जन समुदाय को प्रभाव पूर्ण शैली में संबोधित करते हुए कहा कि स्वार्थवश हम अग्नि को दे रहे हैं कुछ लेने के लिए और अग्नि ले रहा है हमें कुछ देने के लिए, तो देवता कौन हुआ-अग्नि, अग्नि सब देवताओं का मुख है हमने अग्नि को दिया, अग्नि ने वायु को दिया, वायु ने सूर्य को दिया, सूर्य ने बादलों को दिया, बादलों ने पृथ्वी को दिया और पृथ्वी ने हम सबको दे दिया तो जो लेकर अपने पास नहीं रखता, दूसरों को दे देता है, उसी का नाम देवता है। गायत्री मंत्र की उपासना सर्वश्रेष्ठ है। इसमें बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करने की प्रार्थना है। मनुष्य को सद्बुद्धि आ जाये तो भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों लाभ प्राप्त होते हैं। उपासना का अर्थ होता है पास बैठना यानि कि परमात्मा के पास बैठना। अगर बछड़ा गाय के पास न बैठे तो उसे दूध कहाँ से मिलेगा? माँ की छाती से बच्चा नहीं लिपटे तो माँ का दूध कहाँ से मिलेगा? उसी तरह भगवान् के पास बैठे बिना आत्मा की भूख कैसे मिटेगी?

आचार्य श्री जी ने अपने संदेश में कहा अपने कर्मों को हमें खेती के समान समझना चाहिए। अच्छी फसल पाने के लिए बहुत-सी चीजें जरूरी हैं-अच्छी जमीन, अच्छा बीज, अच्छी खाद, अच्छा पानी, अच्छा परिश्रम, अच्छी सुरक्षा इत्यादि। अच्छा कर्मफल पाने के लिए भी बहुत-से तत्त्व जरूरी हैं-अच्छी आत्मा, अच्छा ज्ञान, अच्छा व्यवहार, अच्छी लगन, अच्छी नीयत आदि। कर्म और भाग्य के छोरों को मिलाने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण वाक्य है-**'कर्म करो और भाग्य पर छोड़ दो।'** इससे कभी संभावित निराशा नहीं होगी।

कर प्राणिमात्र का हित-चिन्तन,
दुखियों के कष्ट मिटाता जा।
फल की आशा को त्याग सदा,
अपना कर्त्तव्य निभाता जा॥

इस यज्ञ के मुख्य यजमान श्री प्रफुल्ल लखानी एवं श्रीमती मीना लखानी थे। इस महायज्ञ में 250 परिवारों ने यजमान बनकर पुण्यलाभ प्राप्त किया तथा हजारों श्रद्धालुओं ने विश्वशान्ति एवं मानव कल्याण के लिए आहुतियाँ प्रदान कीं। अनेक लोगों ने जहाँ गायत्री जाप का संकल्प लिया वहाँ अनेक यजमानों ने यज्ञ करने का व्रत लिया। समाज के यशस्वी प्रधान श्री अमर ऐरी जी एवं मंत्री श्री यश कपूर जी ने आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी का सम्मान कर उनका धन्यवाद करते हुए कहा कि उनकी विद्वत्तापूर्ण प्रवचनों से विशाल जनसमूह मंत्रमुग्ध हो गया। आचार्य श्री के विचार प्रेरक, उद्बोधक और शान्ति देने वाले हैं। ऐसे विद्वानों को अपने बीच पाकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं।

आचार्य श्री द्वारा लिखित एवं पटनी परिवार द्वारा प्रकाशित पुस्तक **'गायत्री गौरव'** का लोकार्पण एवं निःशुल्क वितरण किया गया।

इस सप्तदिवसीय गायत्री महायज्ञ को सफल बनाने में सर्वश्री अमर ऐरी, सुदर्शन बेरी, यश कपूर, प्रेम कपूर, रणवीर घई, दक्ष आर्य, सरोज आर्य आदि एवं वैदिक कल्चरल सेंटर के सभी सदस्यों का विशेष योगदान रहा। अंग्रेजी भाषा में चारों वेदों के भाष्यकार डॉ. तुलसीराम जी का विशेष आशीर्वाद प्राप्त होता रहा। आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के प्रवचन से श्रोता इतने मंत्रमुग्ध हुए कि वे आचार्य श्री को कुछ और महीने रहने का आग्रह करने लगे, जिसे आचार्य जी ने विनम्रता पूर्वक अस्वीकार कर दिया। विशाल ऋषिलंगर के साथ यह महायज्ञ सम्पन्न हुआ।

-सूर्यकान्त मिश्रा, सह-सम्पादक

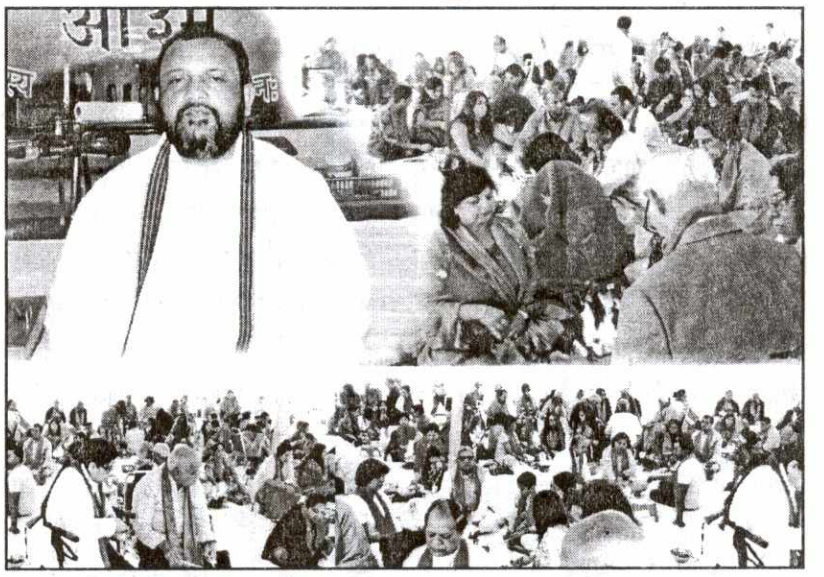

कनाडा के आर्यसमाज मारखम टोरंटो के विशाल प्रांगण में प्रख्यात वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में आहुति देते हुए यजमानगण।

जन्म दिवस यज्ञ सम्पन्न

मनस्विनी सुपौत्री श्रीमती मामकौर देवी के जन्मदिवस के अवसर पर

झज्जर, 21 सितम्बर। वैदिक सत्संग मंडल, यज्ञ समिति व भारत स्वाभिमान ट्रस्ट के तत्त्वावधान में बेटी बचाओ अभियान के तहत मौ० भट्टी गेट में यज्ञ-भजन व प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें यज्ञब्रह्मा योगाचार्य विवेक गोयल व यजमान मुकेश आर्य एवं श्रीमती सोनिया आर्या रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पं० रमेशचन्द्र कौशिक ने की। यज्ञब्रह्मा ने कहा कि यज्ञ करने वाले सभी ऐश्वर्यों को प्राप्त करते हैं व जीवन में आने वाली सभी बाधाओं को सरलता से पार कर लेते हैं। मंडल अध्यक्ष पंडित रमेशचन्द्र कौशिक ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि बेटी को नहीं बल्कि बेटा-बेटी में भेदभाव के व्यवहार को मिटाने की आवश्यकता है जिससे परिवार में सुख-समृद्धि व शान्ति रहती है।

इस अवसर पर सत्संग मंडल द्वारा कन्या भ्रूणहत्या महापाप के विरुद्ध सन्देश देते हुए कलेण्डर जारी किया जिसमें ओ३म् व गायत्री मन्त्र का चित्र भी है। इस अवसर पर बालिकाओं को सम्मानित किया गया। बेटियों ने आत्मरक्षा के लिए सीखे गए लाठी चलाने का प्रदर्शन भी प्रस्तुत किया। मुख्यातिथि श्री कृष्णलाल डोगरा को भी समाजसेवा के लिए सम्मानित किया गया। श्री विजय आर्य ने मंच का कुशल संचालन किया। पं० रमेशचन्द्र कौशिक व पं० जयभगवान आर्य ने मधुर भजनों की प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम में लाला प्रकाशवीर, श्री भगवान आर्य, रमेश सैनी, योगाचार्य रामनिवास योगार्थी, सूर्यप्रकाश, सुरजीत, रामनिवास कोट, सूबेदार भरतसिंह, रतीराम, पनसिंह आदि भारी संख्या में महिला व पुरुष हाजिर रहे।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 07206865945 पर सूचना दें। धन्यवाद।

—व्यवस्थापक

thearyasamaj.org

संस्कृति को भाषा से अलग नहीं किया जा सकता

❑ कृष्णचन्द्र गर्ग, 831 सैक्टर 10 पंचकूला, हरियाणा 0172-4010679

आप जो भाषा जानते हैं उसी भाषा का साहित्य आप पढ़ेंगे। जो साहित्य आप पढ़ेंगे उसी में वर्णित सभ्यता और संस्कृति को आप जान पाएंगे और अन्त में उसी को अपनाएंगे। उसी भाषा में तथा उसी संस्कृति के हिसाब से आप अपने बच्चों के नाम रखेंगे। उर्दू, अरबी, फारसी, हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, अंग्रेजी भाषाओं को पढ़ने वालों के उदाहरण हम सबके सामने हैं। मैं सिर्फ इन भाषाओं को ही ले रहा हूँ, क्योंकि हम लोग इन्हीं भाषा-भाषियों के बीच में रह रहे हैं।

अरबी-फारसी पढ़ने वाले कुरान पढ़कर जेहादी और आतंकी बन रहे हैं। उन्होंने अपनी गतिविधियों से सारी दुनिया को तड़पा रखा है। वे विश्व से इंसानियत को मिटाने पर तुले हैं। हिन्दी और संस्कृत पढ़ने वाले वेद के आदेश **'मनुर्भव-मनुष्य बनो'** की बात करते हैं और **'सर्वे भवन्तु सुखिनः-सभी सुखी हों'** की कामना करते हैं। उर्दू पढ़ने वाले गालिब के निराशापूर्ण शेयर और दूसरे उर्दू के कवियों की इश्किया शेयरो-शायरी करते देखे जाते हैं। वे शराब और मयखाने की बात पर मस्ती से झूमने लगते हैं। पंजाबी वाले पंजाब, पंजाबी और पंजाबियत का ढिंढोरा पीटते हैं। पंजाब के अकाली नेता हिन्दी भाषा से नफरत करते हैं।

भाषाओं का सम्बन्ध सम्प्रदायों से भी है। उर्दू, अरबी, फारसी मुसलमानों की भाषा है। पंजाबी सिखों की भाषा है। अंग्रेजी अंग्रेजों की भाषा है। हिन्दी, संस्कृत हिन्दुओं और आर्यों की भाषा है।

जो पुस्तक जिस भाषा में लिखी गई है उसे उसी भाषा में पढ़ने से ही उसके आशय को पूरी तरह समझा जा सकता है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश हिन्दी भाषा में लिखा है। उसके अंग्रेजी अनुवाद 'LIGHT OF TRUTH' को पढ़ने वाला व्यक्ति सत्यार्थप्रकाश की वास्तविक भावना और विषयों को उतनी गहराई से नहीं पकड़ पाता जितना कि हिन्दी में सत्यार्थप्रकाश को पढ़ने वाला व्यक्ति जान पाता है।

संस्कृत भाषा में वेद, उपनिषद, मनुस्मृति, विदुरनीति आदि वैदिक साहित्य संसार के सभी साहित्यों में सर्वोत्तम है। उस सारे साहित्य के मर्म को जानने के लिए संस्कृत भाषा का जानना परम आवश्यक है। हिन्दी भाषा से कुछ काम चलाया जा सकता है क्योंकि हिन्दी भाषा की लिपि वही है जो संस्कृत की है और हिन्दी भाषा में बहुत से शब्द संस्कृत भाषा से ही लिए गए हैं।

हम वैदिक धर्मी हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि मतों के पुजारी नहीं हैं। हम मानवतावादी हैं और मानवता के पुजारी हैं। हमें देखना है कि विज्ञान-सम्मत, तर्कपूर्ण, बुद्धिपूर्वक, प्रकृति के अनुकूल और मानवतावादी साहित्य किस भाषा में है। फिर उस भाषा को जानना हमारा कर्त्तव्य बन जाता है। वह भाषा संस्कृत ही है। हिन्दी और संस्कृत के सिवाए अन्य भाषाएं आवश्यकता और इच्छानुसार पढ़ी-पढ़ाई जा सकती हैं, परन्तु संस्कृत भाषा के महत्त्व को कम करके आंकना सरासर गलत है।

अगस्त 2014 की 'VEDIC THOUGHTS' पत्रिका में इस विषय पर लाला लाजपतराय तथा महात्मा आनन्द स्वामी के कुछ शब्द छपे हैं। उन पर विचार करना भी जरूरी हो जाता है। लाला लाजपतराय के शब्द छपे हैं- 'स्वामी दयानन्द को जिन लोगों ने समझा वे इंग्लिश जानने वाले थे। संस्कृत जानने वाले तो उनके हर पल विरोधी थे।' मैं समझता हूँ कि इसका कारण संस्कृत भाषा नहीं, अपितु संस्कृत भाषा में जो पुराण आदि अवैदिक पुस्तकें वे पढ़ते हैं, वे थीं। पुराण तर्कहीन, अनर्गल, बेतुका, अमानवीय और गलत बातों से भरे पड़े हैं। ऐसी पुस्तकों को पढ़ने वाले व्यक्ति भला महर्षि दयानन्द की तर्कपूर्ण वेदसम्मत बातों को कैसे स्वीकार कर सकते थे।

दूसरी बात - महात्मा आनन्द स्वामी के शब्द-'हिन्दी रक्षा आन्दोलन के बाद ईमानदारी से मैंने एक बात जो समझी वह थी कि आर्यसमाज का भाषा से कोई सम्बन्ध नहीं। भाषा पर अपनी शक्ति खर्च करने की बजाय प्रचार में शक्ति खर्चें।' इसके उत्तर में-पंजाब के 1957 के हिन्दी सत्याग्रह से मैं भी जुड़ा रहा हूँ। महात्मा आनन्द स्वामी जी के ये शब्द आज तक मेरे सुनने या पढ़ने में कभी नहीं आए थे। इसलिए महात्मा आनन्द स्वामी जी पर कोई भी टिप्पणी न करते हुए मैं इन शब्दों को लेता हूँ 'आर्य समाज का भाषा से कोई सम्बन्ध नहीं।' मैं इन शब्दों से पूरी तरह असहमत हूँ। महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित आर्यसमाज का सारा साहित्य हिन्दी या संस्कृत भाषा में है। क्या हम महर्षि दयानन्द की लेखनी को पढ़ने के लिए दूसरी भाषाओं का सहारा लेंगे? और भी, 1970 में पंजाब में जब सभी शिक्षण संस्थाओं में पंजाबी भाषा को अनिवार्य रूप से शिक्षा का माध्यम घोषित कर दिया गया था तब डी.ए.वी. संस्था ने सर्वोच्च न्यायालय में उस आदेश के खिलाफ अपील की थी कि आर्यसमाज की भाषा हिन्दी है और पंजाब में आर्य समाजी भाषायी अल्पसंख्यक हैं। अतः उन्हें हिन्दी भाषा को शिक्षा का माध्यम रखने की छूट हो। सर्वोच्च न्यायालय ने इस तर्क को स्वीकार किया था और 5 मई 1971 को निर्णय दे दिया था।

विष ही महर्षि की मृत्यु का..... पृष्ठ 2 का शेष.....

श्रीराम शर्मा ने कुतर्क दिया कि गोपालराव हरी ने ऋषि जीवन में विष देने की चर्चा नहीं की। क्या इससे एक सरकारी अधिकारी की विवशता नहीं दिखती, जबकि मौके के इतिहासकार जो उस समय जोधपुर व अजमेर में थे, कि साक्षी असत्य हो जाती है क्या?

(18) लाखों की सम्पदा रखने वाली नन्हीं पर जब विष देने का आरोप लगाया गया, इस आरोप लगाने वालों में महात्मा मुंशीराम, मास्टर आत्माराम, लक्ष्मण जी, महाशय कृष्ण जी आदि पर उसने मानहानि का अभियोग क्यों न किया?

(19) बम्बई की एक मेडिकल संस्था ने भारत सरकार के अनुदान से डॉ. सी. के पारिख का एक ग्रन्थ सिम्पलिफाईड टेस्ट बुक ऑफ मेडिकल ज्युरुपुदेंश एंड टेक्नोलॉजी प्रकाशित करवाया है उसके पृष्ठ 643, 673, 674 पर बड़े विस्तार से विष दिए जाने पर शरीर में होने वाली प्रतिक्रियाओं का वर्णन किया गया है। कोई भी सत्यान्वेषी उन्हें पढ़कर यही निर्णय देगा कि महर्षि जी महाराज के अंतिम दिनों में जीना शारीरिक व्याधियों को कष्ट भोगना पड़ा। वे सब विष दिए जाने के कारण उत्पन्न हुईं।

विश्वबंधु शास्त्री तथा श्रीराम शर्मा, दोनों ही मूलराज को अपना गुरु मानते हैं किन्तु मूलराज जैसे कुटिल ऋषिद्रोही ने मरते दम तक कभी यह नहीं कहा व लिखा कि ऋषि को विष नहीं दिया गया। यहाँ तक कि महर्षि को विष देन के विरोधी श्रीराम शर्मा द्वारा शोलापुर से प्रकाशित प्रो. बहादुर मॉल की पुस्तक से विष दिए जाने के प्रमाण प्रकाशित किया। इससे भी उनके दोहरे चरित्र का पता चलता है। होश्यारपुर के विश्वबंधु, सूर्यभान कुलपति की पुस्तकों में भी विषपान की घटना निकल आई। महात्मा हंसराज की एक पुस्तक से भी इस सम्बन्ध में प्रमाण मिला।

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु आर्यजगत् के एक सर्वोत्तम शोधकर्त्ता हैं। उन्होंने पुस्तक लिखी-**महर्षि का विषपान अमर बलिदान**। इस पुस्तक तथा इससे पूर्व लिखे लेखों के आधार पर श्रीराम शर्मा, लक्ष्मीदत्त दीक्षित आदि टिक न सके तो फिर अब गर्ग जी को यह विवादित कार्य फिर से आरम्भ करने की आवश्यकता क्यों हुई तथा इस झूठ को फिर से फैलाने का प्रयास क्यों किया गया तथा यह भी पुनः आर्यजगत् में ही क्यों प्रकाशित किया गया? इसके पीछे अवश्य कोई साजिश है। इस साजिश का पर्दाफाश होना आवश्यक है ताकि भविष्य में कोई ऐसा अनर्गल प्रलाप पुनः लाने का साहस न कर सके।

ऊपर मैंने जो कुछ लिखा है, वह सब जिज्ञासु जी की पुस्तक के आधार पर ही लिखा है यदि विस्तार से जानना चाहें तो इस पुस्तक तथा प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी द्वारा अनुवाद की गई लक्ष्मण जी वाली ऋषि जीवन का अन्तिम भाग अवश्य पढ़ें। यह भी जानें कि विष किसने दिया, उसके नाम का निर्णय करना हमारा काम नहीं है, हमारा काम है कि वास्तव में विष दिया गया या नहीं। मुद्दे से न भटकते हुए विषपान तक ही सीमित रहते हुए जानें तो पता चलता है कि स्वामी जी की मृत्यु का कारण वास्तव में विषपान ही था जो जोधपुर राजघराने में एक साजिश के तहत दिया गया और इस साजिश में बहुत से लोग यहां तक कि अंग्रेज भी शामिल था।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।